”नेपाल का नेवारी संगीत: एक अनुसंधानात्मक विवेचन”

”Nepal ka Newari Sangeet: Ek Anusandhanatmak Vivechan”

(SYNOPSIS)

(विषय – संक्षेप)

फ़ैकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स

द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा

पी. एच. डी. (संगीत – गायन) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध सार

शोधछात्रा (Researcher)

मोहन शोभा महर्जन

शोध निर्देशक(Guide)

डॉ. राजेश केलकर

गायन विभाग

द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बडौदा

वर्ष: 2018 -2022

Registration Date: 31/01/2018

Registration No.: FOPA/74

नेपाल का नेवारी संगीत : एक अनुसंधानात्मक विवेचन

प्रस्तावना :

'लोक संगीत' अर्थात जन साधारण का संगीत। जन साधारण द्वारा आसानी से कठोर नियमों के बिना, वाद्यों के अभाव में भी, कभी भी किसी भी समय में गा सकते है वह संगीत लोक संगीत है। इसलिए लोक संगीत किसी भी समाज की सामूहिक सम्पत्ति है जो परापूर्व काल से अपनी मौलिक भाषा-बोली, सहज एवं सरल स्वर रचना में गायी जाती है जो वर्तमान में भी स्थान विशेष को दर्शाते हुए पारंपरिक रूप से गायी जाती रही है। लोक संगीत के प्रकार की बात करे तो विश्व भर में कई प्रकार के लोक गीत प्रकार होते हैं जो उस देश की परंपरा, रीतिरिवाज, संस्कारों बोली-भाषा इत्यादि से भरपूर देखने और जानने को मिलती है। इस प्रकार 'नेपाल' देश में भी अपने ही मौलिक लोक संगीत के अथहा भण्डार मिलते हैं। नेपाली लोक संगीत के महासागर में से एक विशेष लोक संगीत का नाम है ''नेवारी संगीत''। नेवारी संगीत नेपाल में बसनेवाली नेवारी जाति द्वारा निर्मित तथा प्रचलित हुआ है। इस संगीत का अधिक प्रचलन नेपाल उपत्यका काठमांडू में होने के कारण पूरे देश में लोकप्रिय हुआ है।

नेपाल में प्रचलित नेवारी संगीत को गौर से देखा जाए तो इस संगीत का व्यवहारिक पक्ष तो मजबूत है जो वर्तमान समय में भी चल रहा है परंतु इस संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष में कुछ कमी दिखाई देती है। "नेपाल का नेवारी संगीत : एक अनुसंधानात्मक विवेचन" इस विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं मिलती है। इसी कारण इस विषय का विस्तृत अध्ययन कर शोधकार्य किया है। किसी भी देश की पहचान ही उस देश की कई लोक संस्कृति, लोक संगीत, परम्पराओं में छिपी होती है। इसलिए उन परम्पराओं एवं संस्कृति को संरक्षण तथा संवर्धन करना आवश्यक होता है। नेवारी संगीत केवल नेपाल में ही प्रचलित नहीं है बल्कि वर्तमान समय में इस संगीत का प्रस्तुतीकरण विभिन्न अन्य देश में भी होने लगा है। इस संगीत में विभिन्न प्रकार की गायन शैलियाँ, वाद्य-वादन, नृत्य, नाटक, साहित्य आदि का विशाल भण्डार प्राचीन समय से उपलब्ध है। इस का कारण, यह है कि नेवारी जाति में अपनी कला, संस्कृति, संगीत के प्रति प्रगाढ़ प्यार और सम्मान है। इस कला संस्कृति को भावी पीढ़ियों तक बचाए रखना अत्यंत आवश्यक है। समय के परिवर्तन के साथ साथ कोई भी पारंपरिक संगीत का भी बदलता स्वरूप दिखाई देता है परंतु हमारे प्राचीन लोक संगीत कला का क्या महत्व है, किस प्रकार इस कला को बचाए रखना है, मौखिक परम्परा को लिखित स्वरूप में बदलकर हो या अन्य नवीन शैली का विकास करकर नेपाल का नेवारी लोक संगीत के भण्डार को भरने की कोशिश की गयी है।

प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता :

नेपाली लोक संगीत जगत में नेवारी जाति का 'नेवारी संगीत' को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान मिला है। अन्य लोक संगीत की तुलना में नेवारी संगीत का प्रयोगात्मक पक्ष मजबूत देखने को मिलता है। जिसके जरिए देश के विभिन्न क्षेत्र में नेवारी संगीत द्वारा मदद मिल सकती है। नेवारी संगीत परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इस परम्परा में मौखिक पक्ष को अपनाकर प्रयोगात्मक तरफ ज्यादा ध्यान दिया गया है। इसलिए इस संगीत के विषय में विस्तृत लिखित स्वरूप को अध्ययन करना चाहे तो आज के समय में अल्प रूप में ही पुस्तक उपलब्ध हैं। नेपाल की धरोहर के रूप में प्रचलित नेवारी संगीत को जितने भी ज्यादा शास्त्रों को इकट्ठा करे उतना ही कम होगा। शोधार्थिनी ने नेपाल का नेवारी संगीत विषय का चयन किया था। नेवारी संगीत के अंतरगत विभिन्न गायन शैलियाँ, वाद्यवादन, उन गायन तथा वादन की प्रस्तुतीकरण इत्यादि विषय में वर्णन प्रस्तुत किया है। इस शोधकार्य के द्वारा नेवारी संगीत के शास्त्र पक्ष को मजबूत करने का प्रयास किया गया है। जिससे संगीत के विद्यार्थियों, कलाकारों एवं समग्र संगीतज्ञों को लाभ मिल सके और भावी पीढ़ी के लिए उसका संरक्षण हो सके। इस कार्य से नेवारी संगीत की शास्त्र पक्ष को और ज्यादा मजबूत करने में, सांस्कृतिक संवर्धन में समर्थन, नेवारी संगीत के प्रचार-प्रसार करने में मदद होगी।

आंकड़े एकत्र करने की विधि :

1. नेवारी संगीत से संबन्धित तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकों की मदद ली गई है।
2. इस शोध से संबन्धित तथ्य/आंकड़े प्राप्त करने के लिए विद्वानों से साक्षात्कार किए गए हैं।
3. विभिन्न लेखों, नेवारी संगीत संबन्धित पत्रिकाओं में से आवश्यकतानुसार अध्ययन किया गया है।
4. नेवारी संगीत के प्रसिद्ध कलाकारों के साथ अन्तरक्रिया कार्यक्रम आयोजना करके, उनके साथ प्रश्नावली करके आकड़े एकत्र किए गए है।
5. इंटरनेट में उपलब्ध नेवारी संगीत से संबन्धित जानकारी का लाभ उठाया गया है।
6. वर्तमान समय में उपलब्ध कुछ पुराने रेकर्डिंग्स, इंटरव्यू को सुनकर जानकारी प्राप्त की गयी है।

नेपाल के नेवारी संगीत संबन्धित जानकारी एवं सामग्री जहाँ-जहाँ से, जो भी उपलब्ध हुई है उसका उपयोग शोधार्थिनी ने इस शोध प्रबंध में किया है।

पुनरावलोकन :

प्रस्तुत विषय से संबन्धित जो तथ्य प्राप्त हुए है, उनके अनुसार इस शोध कार्य को अधिक से अधिक पुनरावृत्ति से बचने का प्रयास किया गया है और संबन्धित तथ्यों की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति की गयी है।

शोधकार्य पद्धति एवं योजना :

प्रस्तुत शोध प्रबंध में तथ्यों को विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक कार्य पद्धति द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया है। नेवारी संगीत प्राचीन काल से चली आ रही संगीत पद्धति है इसलिए विद्वानों का साक्षात्कार कर, प्रश्नावली करके, विभिन्न पर्वों तथा मेला में प्रत्यक्ष सम्मिलित होकर तथ्यों को संकलित करके जानकारी प्राप्त की गयी है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध की कार्य पद्धति वर्तमान समय के अनुसार सहजसुलभ बनाने का प्रयास किया गया है जो कि जनमानस में स्वीकार्य हो।

उद्धेश्य :

नेपाल का नेवारी संगीत एक प्रचलित लोक संगीत प्रकार है। देश की अपनी पहचान ही लोक संस्कृति में छिपी होती है इससे नेवारी संगीत का और अधिक प्रचार-प्रसार होगा तथा सांस्कृतिक संवर्धन में लाभ प्राप्त ऐसा शोधार्थिनी का विनम्र प्रयास है। नेवारी संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष के साथ साथ शास्त्र पक्ष को मजबूत करके केवल नेपाल में ही नहीं बल्कि देश-विदेशों के राज्य में भी इस संगीत का लाभ उठाया जा सकेगा। नेवारी संगीत में देखा जाए तो प्रयोगात्मक और मौखिक पद्धति ही अपनायी गयी है इसलिए इस शोध के जरिए शास्त्र पक्ष को मजबूत कर सके, जिससे भावी पीढ़ी के लिए उसका संरक्षण हो सके।

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु

कृतज्ञता

विषय प्रवेश

अध्याय – 1 नेपाल का संक्षिप्त परिचय (सांस्कृतिक एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि)

1.1 नेपाल का परिचय

1.2 नेपाल शब्द की उत्पत्ति

1.2.1 स्थलगत आधार

1.2.2 धार्मिक आधार

1.2.3 भाषागत आधार

1.2.4 जाति के आधार

1.3 तीनों काल में नेपाल

1.3.1 प्राचीन काल

1.3.2 मध्य काल

1.3.3 आधुनिक काल

1.4 नेपाल के तीन प्रदेशों का परिचय

1.4.1 हिमाल क्षेत्र

1.4.2 पहाड़ क्षेत्र

1.4.3 तराई क्षेत्र

1.5 नेपाल की परिचयात्मक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं संगीत

1.5.1 हिमाली क्षेत्र की संस्कृति एवं संगीत

1.5.1.1 तामाङ जाति का संगीत

1.5.1.2 शेर्पा जाति का संगीत

1.5.2 पहाड़ी क्षेत्र की संस्कृति एवं संगीत

1.5.2.1 झ्याउरे गीत

1.5.2.2 सङ्गीनी गीत

1.5.2.3 देउडा गीत

1.5.3 तराई क्षेत्र की संस्कृति एवं संगीत

1.5.3.1 धीमाल गीत

1.5.3.2 मैथिली गीत

प्रथम अध्याय – प्रथम अध्याय में नेपाल का संक्षिप्त परिचय और उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं संगीत का परिचय प्रस्तुत किया गया है। नेपाल के परिचय में सर्वप्रथम नेपाल शब्द की उत्पत्ति, नेपाल शब्द उत्पत्ति के विभिन्न आधार को प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात नेपाल के विभिन्न काल जैसे प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हो चुकी शासन प्रणाली, शासन समय, अलग अलग शासकों के समय में परिवर्तित संगीत के विकास एवं वर्तमान स्वरूप इत्यादि की चर्चा की गई है। तत्पश्चात नेपाल के तीन प्रदेश हिमाल, पहाड़ और तराई के विषय में वर्णन किया गया है। जिसमें उनकी भौगोलिक स्थिति, रहन-सहन, भाषाएँ, विभिन्न जाति तथा जातीय समूहों के बारे में बताया है। तीनों प्रदेशों के परिचय के पश्चात प्रत्येक प्रदेश की जातियों की संस्कृति को बताया गया है। उसके साथ साथ हिमाली क्षेत्र में गाए जाने वाले गीत संगीत, पहाड़ी क्षेत्र में गाया जाने वाला संगीत तथा तराई क्षेत्र में गाई जाने वाली सांगीतिक गतिविधियों को भी जानने का प्रयास किया गया है। तीनों क्षेत्र में से कुछ अति प्रचलित एवं प्रख्यात गीत तथा उनकी स्वरलिपि भी प्रस्तुत की गई है। इस प्रकार प्रथम अध्याय का मुख्य केन्द्र नेपाल का परिचय और सभी क्षेत्रों की संस्कृति एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, इस अध्याय को प्रस्तुत किया गया है जिससे शोधार्थिनी अपने शोध कार्य की वस्तुनिष्ठा और महत्व को स्पष्ट कर सके।

अध्याय – 2 नेवारी संगीत की उत्पत्ति एवं विकास

2.1 **नेवारी जाति का परिचय**

2.1.1 नेवारी शब्द की उत्पत्ति एवं विस्तार

2.1.2 नेवारी जाति में अन्य जतियों का प्रवेश

2.1.3 नेवारी जाति के प्रमुख निवास क्षेत्र

2.1.4 नेवारी भाषा एवं लिपि

2.1.5 नेवारी जाति के धर्म

2.1.6 नेवारी जाति में उपजातियाँ

2.1.7 नेवारी वेशभूषा

2.1.8 नेवारी जाति की गुठी परम्परा

2.1.9 नेवारी जाति का 'नेपाल संवत'

2.2 **नेवारी संगीत का परिचय**

2.2.1 नेवारी संगीत में प्रयुक्त भाषाएं

2.2.2 नेवारी संगीत के संकलन का इतिहास

2.2.3 नेवारी संगीत की शिक्षण प्रणाली

2.3 **दाफा संगीत**

2.3.1 दाफा संगीत का परिचय

2.3.2 दाफा संगीत की उत्पत्ति

2.3.3 दाफा गायन शैली

2.3.3.1 द्यः ल्हायेगु

2.3.3.2 ग्वारा गायन

2.3.3.3 घोचा गायन

2.3.3.4 चालि गायन

2.3.3.5 आरति

2.3.4 दाफा संगीत में प्रयुक्त राग

2.3.5 दाफा संगीत में प्रयुक्त ताल प्रकार

2.3.6 विभिन्न प्रसंग में दाफा गायन

2.3.6.1 धार्मिक दाफा

2.3.6.1.1 नियमित अथवा निश्चित महीने में दाफा

2.3.6.1.2 विभिन्न त्योहार तथा पर्व में दाफा

2.3.6.2 संस्कारगत दाफा

2.3.6.2.1 व्रतबंध, जंकू आदि शुभ कार्य में दाफा

2.3.6.2.2 विवाह कार्य में दाफा

2.3.6.2.3 मृत्यु संस्कार एवं श्राद्ध कार्य में दाफा

2.3.7 दाफा संगीत में प्रचालित विभिन्न ग्वारा तथा चालि गीत

2.3.7.1 भगवान ग्वारा

2.3.7.2 नृत्यनाथ ग्वारा

2.3.7.3 जय करुणामय मच्छिन्दरनाथ चालि

2.3.7.4 जयन्ती मंगला काली(मालश्री ग्वारा)

2.3.7.5 हे शिव पशुपति (चालि)

2.3.7.6 विद्या दारी (चालि)

2.3.7.7 नारायण जू (चालि)

2.3.7.8 गोपुक्षे पर पर्वत (चालि)

2.3.7.9 राम या नाम (चालि)

2.3.7.10 मञ्जुश्री ग्वारा

2.3.8 नेवारी दाफा भजनों में तिथि का विशेष संदर्भ

2.4 नेवारी संगीत के अन्य प्रकार

2.4.1 नेवारी भजन

2.4.1.1 भजन करने की सामान्य पद्धति

2.4.2 चर्या गीत

2.4.3 तुतः गीत

2.4.4 बारहमासे गीत

2.4.5 सामाजिक गीत

2.4.5.1 मेला पर्व गीत

2.4.5.2 ध्याचू मे (गीत)

2.4.5.2.1 राजनैतिक ध्याचू मे

2.4.5.2.2 सिन्हाज्या या ध्याचू मे

2.4.5.2.3 सामाजिक ध्याचू मे

2.4.5.3 स्वच्छन्द गीत

द्वितीय अध्याय : इस अध्याय में नेवारी जाति का परिचय, नेवारी संगीत एवं उसके विभिन्न प्रकारों के विषय में वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय शोध कार्य का महत्वपूर्ण अध्याय है। इस अध्याय में मुख्य रूप से नेवारी संगीत के बारे में चर्चा की गई है। जिसके माध्यम से नेपाल के नेवारी संगीत प्रकार को जानने में सहायता प्राप्त होती है। सर्वप्रथम नेपाल की नेवारी जाति का परिचय दिया है जिसमें नेवारी शब्द की उत्पत्ति, मुख्य निवास स्थान, भाषा-बोली, धर्म, वेषभूषा, रहन-सहन, उपजातियां इत्यादि के बारे में चर्चा की है। इसके साथ साथ नेवारी संस्कार तथा सांगीतिक परंपरा को संचालन करने वाला गुठी (संस्था) परंपरा एवं नेवारी तिथि 'नेपाल संवत्' के बारे में भी बताने का प्रयास किया गया है। इसके पश्चात नेवारी संगीत के विषयों का संक्षेप में वर्णन किया गया है। नेवारी संगीत में प्रयुक्त भाषाएं, विविध समय में संगीतज्ञों द्वारा किए गए संगीत संकलन के बारे में उल्लेख किया है। नेवारी संगीत में प्राचीन समय से गुरु शिष्य परंपरा कायम रही है जिसमें मौखिक परंपरा प्रचलित है, उस शिक्षण प्रणाली के विषय में भी

चर्चा की गई है। नेवारी संगीत के परिचय के पश्चात नेवारी संगीत की मुख्य गायन शैली के अंतर्गत दाफा संगीत के बारे में बताया गया है। जिसके अंतर्गत दाफा संगीत का परिचय, उसकी उत्पत्ति, गायन विधि, उनमें प्रयोग किए जाने वाले शास्त्रीय राग एवं ताल की चर्चा की गई है। नेवारी संगीत का मुख्य गायन दाफा संगीत भक्ति रस प्रदान गायन शैली है जिसको विभिन्न प्रसंग जैसे धार्मिक परंपरा, विभिन्न संस्कारगत आयोजनों में हो रहे प्रयोग के विषय में बताया गया है। इसके पश्चात दाफा गायन में प्रयोग होने वाले ग्वारा तथा चालि गीत की स्वरलिपि प्रस्तुत की है जो काठमांडू उपत्यका के भिन्न भिन्न स्थानों के दाफा समूह में गाई बजाई जाती है। नेवारी संगीत के दाफा गीत में प्रयोग होने वाले विशेष प्रकार की तिथि लेखन के विषय में भी संक्षेप में वर्णन करने का प्रयास किया गया है। इस शोध प्रबंध के मुख्य विषय नेवारी संगीत की मुख्य चर्चा के पश्चात इस संगीत के अन्य गीत प्रकार नेवारी भजन, चर्या गीत, तुतः गीत, बारहमासे गीत तथा सामाजिक गीत प्रकार के बारे में संक्षेप में वर्णन कर उपलब्ध गीत प्रकार की स्वरलिपियाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार शोधार्थिनी द्वारा द्वितीय अध्याय में शोध प्रबंध के मुख्य विषय नेवारी संगीत एवं उनके प्रकार के बारे में चर्चा करके जानकारी प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

अध्याय – 3 नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्य एवं प्रयोग

3.1 **नेवारी वाद्यों का वर्गीकरण**

3.1.1 अवनद्य वाद्य

3.1.1.1 खिं वाद्य और उसके विभिन्न प्रकार

3.1.1.2 द्याः/धा वाद्य

3.1.1.3 धिमय् वाद्य

3.1.1.4 पछिमा (मृदंग)

3.1.1.5 कान्तां डबडब(डमरू)

3.1.2 सुषिर वाद्य

3.1.2.1 प्वंगा/पोंगा

3.1.2.2 मुहाली वाद्य

3.1.2.3 नेकुं वाद्य

3.1.2.4 बाँसुरी वाद्य

3.1.2.5 काः वाद्य

3.1.3 घन वाद्य

3.1.3.1 ताः वाद्य

3.1.3.2 बभू/ख्वालमलि

3.1.3.3 भुस्या

3.1.3.4 छुस्या

3.1.3.5 तिनकुने/तिनतिनचा

3.1.3.6 घौ/कैयपुई

3.1.3.7 ताइनाई

3.1.3.8 गं

3.1.3.9 घंघला/घंगला

3.1.4 तत् वाद्य

3.1.4.1 पिंवाचा

3.1.4.2 याकुचा बभु/यक्वमुको

3.2 विभिन्न वाद्यों के बोल एवं उनका विस्तार

3.2.1 खिं वाद्य बोल

3.2.2 धा वाद्य बोल

3.2.3 धिमय् वाद्य बोल

3.2.4 नाय् खिं बोल

तृतीय अध्याय : यह अध्याय नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्यों को ध्यान में रख कर लिखा गया है। इस अध्याय में शोधार्थिनी द्वारा नेवारी संगीत में प्रयुक्त मुख्य वाद्य प्रकारों के बारे में वर्णन किया गया है। शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत वाद्यों के चार प्रकार तत्, अवनद्य, घन तथा सुषिर वाद्य का अनुसरण करके प्रायः सम्पूर्ण नेवारी संगीत में प्रयुक्त वाद्यों का वर्गिकरण करके प्रत्येक वाद्य का वर्णन किया गया है। साथ में वाद्यों को बजाने का समय एवं संबन्धित वाद्यों के बोलों का भी समावेश करने का प्रयास किया है। इसके पश्चात नेवारी वाद्यों में प्रयोग होने वाले विभिन्न ताल और उसके विस्तार बोलों का वर्णन किया गया है जो विभिन्न गायन तथा जात्रा उत्सव, संस्कारगत कार्यों में बजाए जाते है। नेवारी संगीत में ताल वाद्य एवं उसके प्रयोग के बारे में अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि नेवारी संगीत में गायन के साथ साथ ताल वाद्यों को महत्वपूर्ण स्थान है।

अध्याय – 4 विभिन्न उत्सव, नृत्य प्रकार एवं नाटकों में नेवारी संगीत

4.1 विभिन्न जात्रा पर्वों में नेवारी संगीत

4.1.1 नारायण जात्रा(कहीं नभको जात्रा हांडीगाउँमा)

4.1.2 इन्द्रजात्रा

4.1.3 गाईजात्रा

4.1.4 कीर्तिपुर में परंपरागत जात्रा

4.1.5 चार लोकेश्वरनाथ जात्रा पर्व

4.2 विभिन्न नृत्य में नेवारी संगीत

4.2.1 कात्ती प्याखं(नृत्य)

4.2.2 लाखे प्याखं(नृत्य)

4.2.3 विभिन्न प्रकार के द्यः प्याखं(नृत्य)

4.2.3.1 किलागल देव प्याखं(नृत्य)

4.2.3.2 भक्तपुर नगर का महाकाली प्याखं(नृत्य)

4.2.3.3 ललितपुर गं प्याखं(नृत्य)

4.3 नेवारी नाटकों में संगीत

चतुर्थ अध्याय : इस अध्याय में नेवारी संगीत के प्रयोग के बारे में बताया गया है। नेवारी जाति में विभिन्न जात्रा उत्सव, मेला, त्यौहार इत्यादि मनाया जाता है इन्हीं पर्वों में नेवारी संगीत का भरपूर रूप में प्रयोग के बारे में चर्चा की गयी है। उसके साथ साथ जात्रा पर्व के वर्णन तथा उसके प्रचलन के बारे में भी वर्णन किया गया है। तत्पश्चात नेवारी बस्तियों में प्रचलित नृत्य प्रकार एवं नाटक में नेवारी संगीत के प्रयोग एवं महत्व के बारे में वर्णन किया गया है। इस प्रकार प्राचीन समय से प्रचलित विभिन्न उत्सव पर्वों में गीत संगीत, नृत्य एवं नाटक के घनिष्ठ संबंध के बारे में बताने का प्रयास किया गया है।

अध्याय – 5 वर्तमान समय में नेवारी संगीत की स्थिति एवं प्रयोग

5.1 नेवारी संगीतज्ञों का साक्षात्कार

5.2 जनमानस में नेवारी संगीत की लोकप्रियता

5.3 प्रचलित नेवारी गीतों की स्वरलिपियाँ

पंचम अध्याय : इस अध्याय में वर्तमान समय में नेवारी संगीत के महत्व एवं प्रयोग के बारे में चर्चा की गयी है। वर्तमान समय में नेवारी संगीत की स्थिति एवं प्रचार को जानने के लिए शोधार्थिनी द्वारा कई नेवारी कलाकार तथा संगीतज्ञों से साक्षात्कार करके उपलब्द तथ्य एवं जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास

किया गया है। उसके पश्चात जनमानस में नेवारी संगीत की लोकप्रियता के बारे में चर्चा की गयी है। नेवारी संगीत केवल भक्ति संगीत में ही सीमित न हो जाए इसलिए वर्तमान समय में समय की माँग अनुसार अन्य गीत प्रकार जो चलन में है उनहे भी प्रस्तुत करने एवं गीतों की स्वरलिपियाँ भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

उपसंहार : प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत सभी छः अध्यायों के सार व निष्कर्ष को समाहित किया गया है। समस्त अध्यायों व उनके उपअध्यायों के भी सार प्रस्तुत किए गए हैं। प्रथम अध्याय में नेपाल देश एवं सभी प्रदेशों का परिचय दिया गया हैं एवं उनकी सांगीतिक गतिविधियों को बताने का प्रयास किया गया है। द्वितीय अध्याय में नेवारी जाति का परिचय तथा उनके द्वारा गाया जाने वाले नेवारी संगीत आदि का परिचय प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय में नेवारी संगीत में प्रयोग में आने वाले विभिन्न वाद्यों का परिचय एवं बजाने की विधि का वर्णन किया है। चतुर्थ अध्याय में नेवारी संगीत का प्रयोग विभिन्न उत्सव, पर्व, त्यौहार, नृत्य प्रकार एवं नाटक इत्यादि में बताया है इसकी चर्चा की गयी है। पांचवा अध्याय में वर्तमान समय में नेवारी संगीत की स्थिति, लोकप्रियता एवं महत्व के बारे में वर्णन किया गया है और इन सभी का पूर्ण निष्कर्ष छठे अध्याय में उपसंहार के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

नेवारी/ नेपाली पुस्तक

1) राजभंडारी, सुनिता/ 8 नवंबर 2018/ कातीप्याखनय् नृसिंह अवतार/ बाबुराजा महर्जन क्लासिक डेवलपर्स प्रा. लि. हक त्वाः यल/ डट्स प्रिंटिंग हाउस/ ISBN:978-9937-0-4260-4
2) उपाध्याय, श्रीरामप्रसाद/ सातौं संस्करण – वि. सं. 2074/ नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास/ रत्न पुस्तक भंडार/ काठमांडू, नेपाल/ ISBN: 99933-0-455-7
3) आचार्य, बाबुराम/ वि. सं. 2070/ नेपाल को संक्षिप्त वृतांत/ आंतर्राष्ट्रीय मंच छापाखाना प्रा. लि., अनामतनगर, काठमांडू
4) व्रजाचार्य, धनव्रज/ वि. सं. 2030/ लिच्छविकाल का अभिलेख नेपाल र एशियालि अध्ययन संस्थान/ त्रि.वि.वि.
5) आचार्य, बाबुराम/ वि. सं. 2018/ प्राचीन काल नेपाल/ आंतर्राष्ट्रीय मंच छापाखाना प्रा. लि., काठमांडू
6) तंडुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ संगीतामृत प्रकाशन समिति/ ISBN: 978-9937-2-2972-2
7) तिवारी, शोभा/ वि. सं. 2060/ लोकसंगीतार्पण/ साझा प्रकाशन, पुलचोक, ललितपुर/ ISBN: 99933-2-332-2
8) जंगम दीपक, रावल बेनी/ नवंबर 2000/ संगीत सुरभि/ भृकुटी पुस्तक तथा मसलन्द भंडार, प्रदर्शनी मार्ग, काठमांडू
9) श्रेष्ठ, तुलसीमान/ वि. सं. 2071/ नेपाली लोकगीत परिचय र विश्लेषण/ नवकला पब्लिकेशन अद्वेतमार्ग, काठमांडू/ ISBN: 978-9937-2-8773-9
10) कापडि भ्रमर, रामभरोस/ वि. सं. 2074/ मैथिल लोकसंस्कृति विविध आयाम/ नेपाल प्रज्ञा – प्रतिष्ठान, काठमांडू/ ISBN: 978-9937-689-84-7
11) वैद्य, जनकलाल/ वि. सं. 2059/ नेपाल भाषाया प्राचीन काव्य सिर्जना/ नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी/ ISBN: 99933-50-32-X
12) तुलाधर, प्रेमशांति/ नेपाल भाषा साइत्यको इतिहास/ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी
13) कारंजित, मंगला/ वि. सं. 2052 (ई.सं. 1995 12th July)/ ऋतु मे बा-हमासे मेया अध्ययन/ नेपालभाषा मिसा खलः/ इंद्रेणी अफसेट प्रेस, येँ
14) शाक्य, सृजना/ सन् 2013/ नेवाः समाजय् ध्याचू मे/ सोसाइटी फर नेवार स्वाडिज/ संगम प्रिंटर्स/ ISBN: 978-9937-2-6444-0

15) महर्जन , राजेंद्र/ वि.सं. 2077/ सिलु म्ये र सामाजिक प्रतिरोध/ नेपाल प्रज्ञा – प्रतिष्ठान, कमलादी, काठमाण्डौ/ ISBN: 978-9937-723-9-0-9
16) लाछि, गणेशराम/ वि.सं. 2072/ अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा मध्यपुर/ तेजकृष्ण फाउंडेशन, चपाचो, मध्यपुर धिमि/ ISBN: 978-9937-0-0256-1
17) महर्जन, राजेंद्र/ वि. सं. 2076/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ श्री जट्टाधारी नित्यनाथ एकीकृत बाजं खलः, टंगल-12 ललितपुर/ ISBN: 978-9937-05620-5
18) नेवाः म्ये/ नेवा सांस्कृतिक पुचः, हेटौंडा, मकवानपुर
19) नेपाल परिचय/ वि. सं. 2041/ पाठ्यक्रम विकास केंद्र, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ काठमाण्डौ
20) ब्रजाचार्य, मदनसेन/ ई. सं. 2021, जनवरी 14/ नेपाः गाः या नेवाः बौद्धसंस्कृतिइ लोकबाजा/विनायक प्रेस, कमलपोखरी , धोविधारा, यैँ/ ISBN: 97-9937-0-8361-4
21) प्रजापति, सुभाषराम/ वि. सं. 2063/ संस्कृति भिन्न/ नेवाटेक ईंकोर्पोरेटेड सियाटल वाशिंगटन, सं. रा. अमेरिका/ ISBN: 99946-999-4-6
22) श्रेष्ठ, प्रद्‌युम्न/ ने. सं. 1124/झीगु भजन म्ये/ नेपाल भाषा अकादमी/ छत्रपाठी काठमाण्डौ/ ISBN: 99933-789-3-3
23) मानन्धर, त्रिरत्न/ वि. सं. 2071/ हांदे दाफाया म्हसीका व म्येया स्वरलिपि/ कृष्ण मानन्धर/ छत्रपाटी, यैँ/ ISBN: 978-9937-2-8614-5
24) महर्जन, शेष नारायण/ वि. सं. 2063/ परंपरागत पृखुधाँ त्वाः या दापा म्ये/ पृखुधां सांस्कृतिक समूह, खेपपुखु, यैँ
25) ताम्रकार, गोविंद/ वि. सं. 2059/ दाफा भजनया म्ये मुना/ कृष्णमाया, राजेश ताम्रकार/ यल
26) शाक्य, यचु/ धाः बाजयां म्हसीकाः/ छत्रपाल महाभैरव मकां खल, लुभू
27) नित्य नाथ दाफा म्ये सफू/ मानत्वाः किपू-10
28) नित्य नाथ दाफा म्ये सफू/ कूटुसागल/ कीर्तिपुर
29) श्रेष्ठ, हरिबोल/ वि. सं. 2075/ राम कृष्ण सिं, सक/ ISBN: 978-9937-0-4261-1
30) मुनिकार, चंद्रमान/ वि. सं. 2069/ चर्या गीत र नृत्यको घनिष्ठ संबंध/ ब्रज कला कुंज/ काठमाण्डौ-19, नेपाल
31) महर्जन, शेषनारायण/ वि. सं. 2075/ बांसुरी स्वर लिपि/ नेवाः देय् दबु/ पुष्पलालपथ, यैँ
32) श्रेष्ठ, विनोद/ वि. सं. 2070/ नाय् खिं च्व्येकेगु/ विनोद श्रेष्ठ, कीर्तिपुर/ ISBN: 978-9937-2-6754-0
33) शाक्य, धर्मरत्न/ वि. सं. 2044/ झीगु बाजा जिगु संस्कृति/ तारेमान संघ, ललितपुर नागबहाल

34) शाक्य रेखा, दंगोल शरण/ वि. सं. 2075/ जीवंत संस्कृतिहरू/ डॉ. हेरंब बहादूर, स्नेहलता राजभण्डारी/ ललितपुर/ ISBN: 978-9937-0-4948-1

35) शाक्य, सुवर्ण/ वि. सं. 2069/ येंयाः इंद्रजात्रा/ ओलंपस क्लब/ उँबहा, यैँ

36) महर्जन, श्रीकृष्ण/ ने. सं. 1123/ किपूचा इंद्रायणी जात्रा/ न्हूजः सांस्कृतिक पुचः/ किपू

37) श्रेष्ठ, हरिमान/ वि. सं. 2066/ कात्ती प्याखँ/ ज्येष्ठ नागरिक समाज – नेपाल/ मंगलबजार, यल/ ISBN: 978-9937-2-1774-3

38) जधारी, मुक्तिसुंदर/ वि. सं. 2072/ महाकाली नाच/ मुक्ति संगीत प्रशिक्षण केंद्र/ टौमढ़ी भक्तपुर, नेपाल/ ISBN: 99946-999-2-X

39) प्रजापति, सुभाषराम/ अक्तूबर 2006/ पुलांगु नेपालभाषा नाटकया संगीत पक्ष/ नेवाटेक ईंकोर्पोरेटेड/ सं. रा. अमेरिका/ ISBN: 99946-999-2-X

40) नेवाः प्रज्ञा/ वि. सं. 2075/ नेपालभाषा एकेडमी/ न्यामासिमा, देवध्वाका, कीर्तिपुर/ ISSN: 2631-2042

41) लाछि, गणेशराम/ वि. सं. 2062/ नेपालमंडलका मुकुंडों नाच/ मध्यपुर कला परिषद्/ धिमि/ ISBN: 99946-707-0-0

42) नित्य नाथ धिमे खलः/ थटा त्वाः/ हाड़ीगाँउ काठमाण्डौ

अंग्रेज़ी पुस्तक

1) Widdess Richard/ 2013/ Dapha: Sacred singing in a South Asian city/ Ashgate/ ISBN: 978-1-138-89575

2) Bandhu C. M./ वि. सं. 2073/ Aspects of Nepalese Folklore/ Nepal Academy/ Pragya Chhapkhana, Kamaladi, Kathmandhu/ ISBN: 978-9937-689-18-2

3) Lienhard, Siegfried/ 1992/ Songs of Nepal/ University of Hawaii Press/ ISBN: 81-208-0963-7

4) Grandin, Ingemat/ 1989/ Music and Media in local life/ 2nd edition – Mandala boom point/ Kathmandu/ ISBN: 378-99946-55-17-5

शोध प्रबंध

1) पौंड्याल हरी प्रसाद/ नेपाल के प्रचलित लोक संगीत में वाद्यों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/ वाद्य विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस/ वर्ष: 2019

लघु शोध निबंध

1) श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ कीर्तिपुर पाँगा महाब्बो दाफा खलः मा मासिकरूप गाईने दाफा: एक अध्ययन/ गायन विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय/ वि. सं. 2075

पत्रिका

1) महर्जन, राकेश/ जगज्ज्योति मल्लया बनज क्ड़ान छुनों मचुव म्येँदुने/ थाय्भु – 14/ वि. सं. 2078

OR

थाय्भु – 14/ वि. सं. 2078/ नेपाल प्रज्ञा – प्रतिष्ठान , कमलादी, काठमाण्डौ

2) श्रेष्ठ, प्रद्युम्नकृष्ण/ अन्तर्वार्ता प्रद्युम्नकृष्ण/ धिमय् – पौ/ आश्विन – फागुन वि. सं. 2071

नेवारी संगीतज्ञों, कलाकार तथा गुरुओं के साक्षात्कार

1) दुर्गा लाल श्रेष्ठ/ जन कवि/ 19-05-2016/ काठमाण्डौ
2) भृगुराम श्रेष्ठ/ नेवारी लोक गायक/ 28-05-2016/ काठमाण्डौ
3) प्राज्ञ रामकृष्ण दुवाल/ वरिष्ठ जनगायक/ 03-11-2018/ कीर्तिपुर काठमाण्डौ
4) गुज्जे मालाकार/ गायक तथा संगीतकार/ 01-09-2021/ कीर्तिपुर काठमाण्डौ
5) मुक्तिनाथ महर्जन/ तनानी वाद्य दाफा गुरु/ 30-09-2018/ कीर्तिपुर काठमाण्डौ
6) ज्ञानेश्वर महर्जन/ कूटूसागल गायन दाफा गुरु/ 15-12-2018/ कीर्तिपुर काठमाण्डौ
7) राजेंद्र महर्जन/ गायन दाफा गुरु/ 06-09-2021/ ललितपुर
8) नरेश प्रजापति/ वाद्य प्रशिक्षक तथा कलाकार/ 29-08-2021/ नाचघर काठमाण्डौ
9) प्रो. न्हुंच्छे बहादूर दंगोल/ वाद्य गुरु तथा कलाकार/ 24-11-2018/ काठमाण्डौ
10) टेक बहादुर डंगोल/ गायन दाफा गुरु/ 20-10-2018/ हाड़ीगाँउ काठमाण्डौ
11) विष्णु जलमी/ नेवारी लोक गायक/ 07-12-2018/ काठमाण्डौ
12) स्व. गोविंद महर्जन/ गायन – वादन दाफा गुरु/ 26-10-2018/ पाँगा काठमाण्डौ
13) शेष नारायण महर्जन/ वाद्य गुरु/ 03-11-2018/ काठमाण्डौ
14) गणेशराम लाछि/ नेपाली संस्कृति एवं अनुभवी पारखी विद्वान, अन्वेषक एवं लेखक/ 03-11-2018/ मध्यपूर ढिमी
15) काजीमान डंगोल/ 'ज्यापू समाज यल' पत्रिका के कार्यकारी संपादक/ 28-10-2018/ इमाडोल ललितपुर

16) मुक्ति सुंदर जधारी/ संगीत प्रशिक्षक एवं कलाकार/ 31-10-2018/ भक्तपुर

वेबसाइट्स

1) http://youtu.be/-qsFFNZGwnU /Dt:01/01/2022/Time:8:00pm
2) https://www.youtube.com/watch?v=Oa22v5T4_ds/Dt: 24/12/2021/Time:9:00pm
3) https://www.londonnepalnews.com/ Dt: 04/08/2020/Time:11:00pm
4) https://www.youtube.com/watch?v=MrNkmFAFCfI/ Dt:24/03/2022/Time:7:30pm
5) http://ignited.in/I/a/304286 /Dt: 06/06/2021/Time:6:00pm
6) https://youtu.be/WEwM9PNKFmc /Dt: 04/02/2021/Time:7:00pm
7) https://youtu.be/mp3m9DiDpR0 /Dt: 09/02/2021/Time:11:00pm
8) https://youtu.be/uUI94FXBEmo /Dt: 17/03/2021/Time:10:00pm